जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – फरवरी 2025 ।। अंक – 55 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

गौपालन में सफलता की मिसाल बनीं ममता दीदी (पृष्ठ – 02)

पशु सखी के रूप में पहचान बना रही हैं लवंग कुमारी (पृष्ठ – 03)

कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (पृष्ठ – 04)

पशुधन गतिविधि ने खोले उद्यमिता के नए आयाम

जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े गरीब परिवारों के लिए पशुधन स्थायी आमदनी का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। यह न केवल उनकी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा कर रहा है बल्कि व्यवसायिक स्तर पर उन्हें उद्यमी भी बनाया है। जीविका द्वारा बकरी पालन, गौ–पालन, मुर्गी पालन और मत्स्य पालन जैसी गतिविधियों को ग्रामीण परिवारों के बीच व्यापक रूप से प्रोत्साहित किया गया है। इन प्रयासों के फलस्वरूप इन परिवारों के जीवन स्तर में स्थायित्व आया है, जो पिछले 18 वर्षों से जीविका द्वारा पशुधन के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सफलता को दर्शाया है।

पशुधन गतिविधियों को बढ़ावा देने में पशु सखी की भी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। पशु सखियाँ को बकरी पालन कर रही एक जीविका दीदियों को बकरियों की देखभाल, उनके खानपान, वजन, उपचार और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ देती है। पशु सखी ग्रामीण क्षेत्रों में बकरी पालकों के लिए चिकित्सीय सेवाएँ उपलब्ध कराती है और उन्हें बकरी पालन गतिविधि को एक उद्यम के रूप में अपनाने हेतु प्रेरित करती है। वर्तमान में राज्य भर में 837 बकरी उत्पादक समूह गठित किए गए हैं और 6498 पशु सखियाँ इन उत्पादक समूहों से जुड़ी हैं। ये पशु सखियाँ बकरी पालक दीदियों को इस उद्यम से बेहतर आय अर्जित करने में सहयोग प्रदान कर रही हैं।

जीविका द्वारा पशुधन गतिविधियों को बृहत स्तर पर संचालन हेतु अनेक उत्पादक कंपनियाँ भी गठित की गयी है। इस हेतु कौशिकी महिला दुग्ध उत्पादक कंपनी गठित हुई है जिसका संचालन स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। कौशिकी दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड के माध्यम से प्रतिदिन लगभग 60 हजार लीटर दूध का व्यवसाय किया जा रहा है। अब तक 1 अरब 37 करोड़ 68 लाख रुपये का मुनाफा सीधे जीविका दीदियों को मिल चुका है।

इसी प्रकार, सीमांचल बकरी उत्पादक कंपनी लिमिटेड से 19,956 जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं, जिन्होंने अब तक 14,559 बकरियों का व्यवसाय किया है। इस व्यवसाय से दीदियों को 1 करोड़ रुपये से अधिक का शुद्ध मुनाफा प्राप्त हुआ है। बकरी पालन के साथ–साथ कुछ जीविका दीदियाँ अपनी मीट की दुकान भी चला रही हैं, जिससे उनकी आय के एक नए स्रोत का निर्माण हुआ है।

मुर्गी पालन भी ग्रामीण परिवारों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय बन गया है। मुर्गी पालन हेतु राज्य में कुल 129 मदर यूनिट संचालित हैं, जिनसे 2,07,000 जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं। मदर यूनिट नवजात चूजों को पालने और उन्हें बड़े मुर्गों के रूप में तैयार करने में मदद करती है।

मत्स्य पालन के क्षेत्र में भी जीविका ने नई ऊँचाइयों को छुआ है। मनरेगा के साथ अभिसरण के माध्यम से राज्य में 111 तालाब विकसित किए गए हैं, जिनसे 748 जीविका दीदियाँ जुड़ी हैं। ये दीदियाँ मछलियों का उत्पादन कर न केवल अपने क्षेत्रीय बाजारों में बिक्री कर रही है बल्कि जिले के बाहर भी व्यवसाय कर रही हैं। इन तालाबों के माध्यम से मछलियों के उत्पादन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की है।

पशुधन आधारित गतिविधियों जैसे गौ–पालन, बकरी पालन, मुर्गी पालन और मत्स्य पालन ने जीविका दीदियों के लिए उद्यमिता के नए आयाम खोले हैं। इन गतिविधियों से उनके परिवारों को एक स्थायी और सशक्त आय का श्रोत मिला है, जिसने उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। स्वयं सहायता समूह की दीदियों ने यह साबित कर दिया है कि सही मार्गदर्शन और प्रयासों से ग्रामीण महिलाएँ भी बड़े उद्यमों का संचालन कर सकती हैं।

जीविका दीदियाँ पशुधन उद्यमिता के क्षेत्र में नई इबारत लिखने और समाज के लिए प्रेरणा श्रोत बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही हैं। इनकी सफलता केवल इनके परिवारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भी एक सकारात्मक बदलाव का परिचायक है।

गौपालन में सफलता की मिसाल बनीं ममता दीदी

गया जिले के गुरुआ प्रखंड के दुब्बा गाँव की ममता कुमारी वर्ष 2012 में चाँदनी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। यह समूह नीलम जीविका ग्राम संगठन और तारा जीविका महिला स्वावलंबी सहकारी समिति से संबद्ध है। ममता अपने पति अवधेश कुमार सिंह और बच्चों के साथ रहकर गौपालन का कार्य कर रही हैं। उनके पति सीमेंट का व्यवसाय करते हैं और बच्चो की अच्छी शिक्षा भी दिलवा रहे है।

ममता दीदी ने अपने खाली समय का सदुपयोग करने के लिए एक गाय से गौपालन शुरू किया। धीरे–धीरे गायों की संख्या बढ़ती गई। वर्तमान में उनके पास 32 गायें हैं, जिनसे प्रतिदिन 100 लीटर से अधिक दूध प्राप्त होता है। यह दूध स्थानीय बाजार में बेचा जाता है। उनके बच्चों ने उन्नत नस्ल की गायों के विकास के लिए एम्ब्रियो तकनीक और कृत्रिम गर्भाधान को अपनाया है, जिससे प्रति गाय 40 लीटर दूध उत्पादन का लक्ष्य रखा है।

उन्होंने दूध पाश्चुरीकरण और पैकिंग मशीन भी लगाली है। अब वे उन्नत नस्ल की गायें विकसित कर पुन : इस व्यवसाय को शुरू करने की योजना बना रही हैं। जीविका से मिले एक लाख के ऋण से उन्होंने दूध निकालने की मशीन खरीदी, जिससे दूध निकालना आसान हुआ है।

ममता दीदी के सफल गौपालन व्यवसाय से अन्य जीविका दीदियों को प्रेरणा मिल रही है। वे कहती हैं कि जीविका से जुड़ने के बाद उनके जीवन में बड़ा बदलाव आया है। आर्थिक स्वतंत्रता और ऋण सुविधाओं के कारण वे आत्मनिर्भर बनीं और आगे बढ़ने का रास्ता मिला है।

मेहनत और सही मार्गदर्शन से आत्मनिर्भरता का सफर

किशनगंज जिले के ठाकुरगंज प्रखंड के धुमगढ़ गाँव की रहने वाली सावेरा खातून ने अपनी मेहनत और जीविका के सही मार्गदर्शन से आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की है। जागृति जीविका स्वयं सहायता समूह और अर्पण ग्राम संगठन की सक्रिय सदस्य सावेरा दीदी ने कभी दैनिक मजदूरी करने को विवश जीवन से लेकर स्वरोजगार के जरिए सम्मानजनक जीवन तक का सफर तय किया है।

जीविका से जुड़ने के बाद, सावेरा दीदी ने समूह से किस्तों में 50 हजार रुपये का ऋण लिया और गाय पालन की शुरुआत की। साथ ही उन्होंने बकरी पालन भी कर रही है। गाय और बकरी से होने वाली आमदनी, जैसे दूध और पाठा–पाठी की बिक्री से उनकी मासिक आय 12 से 15 हजार रुपये हो गई। सावेरा दीदी बताती हैं कि वे प्रतिदिन 12 से 15 लीटर दूध बेचती हैं, जिससे उन्हें अच्छी आय हो रही है।

सिर्फ पशुपालन ही नहीं, सावेरा दीदी ने चायपत्ती और मौसमी सब्जियों की खेती भी शुरू की। चायपत्ता की खेती से सालाना 70 से 80 हजार रुपये की कमाई होती है, जबकि सब्जियों को नजदीकी बाजार में बेचकर अतिरिक्त आय हो जाती है। अपनी मेहनत से अर्जित आय से उन्होंने पक्का मकान बनवाया है और अपने बच्चों की परवरिश बेहतर तरीके से कर रही है।

जीविका समूह से जुड़ने और बैठकों में भाग लेने से उन्हें स्वरोजगार के नए अवसरों और क्षमतावर्धन हुआ। आज, सावेरा दीदी अपने आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत से एक गरिमामय जीवन जी रही हैं। उनकी सफलता की कहानी दूसरों के लिए प्रेरणा है कि मेहनत और सही मार्गदर्शन से हर चुनौती का मुकाबला किया जा सकता है।

गाय और बकरी पालन से आत्मनिर्भर बनी चांदनी देवी

भागलपुर जिले के गोपालपुर प्रखंड स्थित मकनपुर गाँव की रहने वाली चांदनी देवी ने अपनी मेहनत और जीविका की मदद से आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की है। पहले दैनिक मजदूरी पर निर्भर रहने वाली चांदनी देवी ने वर्ष 2019 में कावेरी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद बकरी और गाय पालन को अपनी आजीविका का मुख्य साधन बना लिया।

समूह से जुड़ने से पहले, चांदनी देवी को अपने परिवार के गुजारे के लिए दूसरों के खेतों में दैनिक मजदूरी करनी पड़ती थी। दैनिक मजदूरी से होने वाली सीमित आय से परिवार का भरण–पोषण करना मुश्किल था। नवंबर 2019 में कावेरी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद, उन्होंने समूह की बैठकों में भाग लेना शुरू किया और समूह से 12,000 रुपये का ऋण लेकर दो बकरियाँ खरीदीं। कुछ ही समय में इन बकरियों ने बच्चों को जन्म दिया, जिससे उनके पास कुल 6 बकरियाँ हो गईं। मेहनत और लगन से उन्होंने बकरीपालन का कार्य किया और उनके बच्चों को बेचकर अच्छी आय अर्जित की।

चांदनी देवी बताती है कि बकरी पालन में लागत कम होती है, लेकिन मेहनत अधिक करनी पड़ती है। उनके पास अब छह बकरियाँ हैं, जो साल में 12–15 बच्चों को जन्म देती हैं। इन बकरियों के पाठा–पाठी को 5 से 8 हजार रुपये की दर से बेचकर उन्होंने पिछले दो वर्षों में 70–75 हजार रुपये की आय अर्जित की है।

बकरी पालन से हुई आय और समूह से ऋण लेकर उन्होंने एक गाय भी खरीदी है। वह गाय पालन भी कर रही है। गाय से रोजाना 4 लीटर दूध का उत्पादन होता है, जिसमें से 2 लीटर दूध अपने परिवार के लिए रखती हैं और बाकी दूध बेचकर प्रतिदिन 100 रुपये तक कमाती हैं। साथ ही, उन्होंने पट्टे पर जमीन लेकर चारे की व्यवस्था के लिए खेती भी शुरू कर दी है।

चांदनी देवी अब गाय, बकरी पालन और खेती से अपनी आजीविका चला रही हैं। वह कहती हैं कि जीविका समूह से जुड़ने के बाद उन्हें आत्मनिर्भर बनने की राह मिली। आज, उन्हें दूसरों के सामने पैसे के लिए हाथ फैलाने की जरूरत महसूस नही होती है। उव उनका परिवार गरिमापूर्ण जीवन जी रही हैं। उनकी सफलता अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा है।

पशु सखी के रूप में पहचान बना रही हैं लवंग कुमारी

कटिहार जिले के कुर्सेला प्रखंड की दक्षिणी मुरादपुर पंचायत की रहने वाली लवंग कुमारी लाडली जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। उन्होंने बकरी पालन में अपने अनुभव और सामुदायिक सेवा के प्रति समर्पण के जरिए एक नई पहचान बनाई है। उन्होंने अपने प्रयासों और कार्य–कुशलता से अपने पंचायत में एक आदर्श उद्यमी भी बनी है।

लवंग कुमारी को बकरी पालन में रुचि और अनुभव पहले से था। नवंबर 2023 में रिमझिम जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा पशु सखी के चयन के लिए विज्ञापन निकाला गया। उन्होंने आवेदन किया और चयनित हुईं। दिसंबर 2023 में बकरी के स्वास्थ्य और प्रबंधन पर उन्हें पाँच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के बाद उन्होंने अपने पंचायत की 120 बकरी पालक दीदियों का सर्वेक्षण किया और उन्हें बकरी पालन के सही तरीके भी सिखाई है।

लवंग कुमारी अपने पंचायत में बकरी पालकों के घर–घर जाकर कृमि की दवा देना, बधियाकरण करना, नाखून काटना, प्राथमिक उपचार करना, दाना मिश्रण और नमक ईंट सस्ते दर पर उपलब्ध कराना जैसे काम करती हैं। बरसात के मौसम में बकरियों की मृत्यु रोकने के लिए उन्होंने 840 बकरियों को टीके लगाकर उनकी सुरक्षा की। इन सेवाओं से पंचायत स्तर के बकरी पालकों को राहत मिली और उनकी आय भी बढ़ी है। लवंग कुमारी अब एक सफल उद्यमी हैं। सीमांचल जीविका गोट प्रोड्यूसर कंपनी के साथ जुड़कर, वह पंचायत के 200 बकरी पालकों को सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। लवंग कुमारी की मेहनत और सामुदायिक सेवा की भावना अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। उनकी कहानी यह दिखाती है कि सही प्रशिक्षण और समर्पण से एक व्यक्ति न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकता है बल्कि अपने समुदाय को भी आगे बढ़ने के लिए मदद और प्रेरित कर सकती है।

कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

महिलाओं को सशक्त बनाता एक सफल उद्यम

कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (के.एम.एम.पी.सी.) महिलाओं द्वारा संचालित एक सफल और प्रेरणादायक उद्यम है। 22 सितंबर 2017 को बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति के सहयोग से स्थापित यह उत्पादक कंपनी बिहार के सहरसा जिला में संचालित है। अक्टूबर 2018 में अपने संचालन की शुरुआत करते हुए, इस कंपनी ने दुग्ध मूल्य श्रृंखला के विकास के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। के.एम.एम.पी.सी. चार जिलों– सहरसा, सुपौल, मधेपुरा और खगड़िया में समूह से जुड़ी महिलाओं के लिए आजीविका का एक मजबूत साधन बनकर उभरा है।

यह कंपनी एक उत्पादक उद्यम के रूप में काम करती है। कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड से कुल 26,292 शेयरधारक जुड़े हैं और इसकी शेयर पूंजी 3.25 करोड़ रुपये है। अध्यक्ष के रूप में श्रीमती रूबी कुमारी और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में श्री ब्रजेश नारायण सिंह के नेतृत्व में कंपनी ने वित्तीय प्रगति का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड ने 13,77 लाख रुपये का कारोबार किया, जिसमें से 11,08 लाख रुपये सीधे किसानों को भुगतान किये गये।

परियोजना का अवलोकन

के.एम.एम.पी.सी. ने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से डेयरी मूल्य श्रृंखला विकास परियोजना को सहरसा, सुपौल और मधेपुरा जिलों में लागू किया। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से वित्तीय सहायता और नैशनल डेयरी डेवलेपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) डेयरी सर्विसेज से तकनीकी सहायता प्राप्त इस परियोजना की अवधि फरवरी 2018 से मार्च 2022 तक थी। परियोजना का उद्देश्य 800 गाँवों की 40,000 महिला दुग्ध उत्पादकों को जोड़ना और वित्तीय वर्ष 2022–23 तक प्रति दिन औसतन 61,823 लीटर दूध का संग्रह सुनिश्चित करना था। परियोजना को लागू करने के लिए राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से 3,806.30 लाख रुपये का अनुदान स्वीकृत किया गया, जिसमें से 1,891.66 लाख रुपये पूँजीगत लागत और 1,914.64 लाख रुपये कार्यक्रम लागत के लिए आवंटित किए गए। इस पहल ने इन क्षेत्रों में डेयरी क्षेत्र में क्रांति ला दी है और महिला दुग्ध किसानों को आर्थिक स्थिरता प्रदान की है।

संचालन क्षेत्र

वर्तमान समय तक कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी से 26,292 सदस्य जुड़े हैं। 41 प्रखंडों में 14 बल्क मिल्क कूलर्स (बीएमसी) और 708 सक्रिय मिल्क प्रोक्योरमेंट पॉइंट्स (एमपीपी) स्थापित किया गया हैं। कंपनी प्रतिदिन औसतन 59,828 लीटर दूध का प्रसंस्करण करती है। सहरसा जिले में प्रतिदिन 14,299 लीटर दूध संग्रहित होता है, जबकि मधेपुरा में 23,647 लीटर, सुपौल 12,385 लीटर और खगड़िया 9,497 लीटर दूध का संग्रहण होता है।

अब तक किए गए उल्लेखनीय कार्य

- कंपनी के सदस्यों ने अब तक कुल 891 लाख लीटर दूध की आपूर्ति की है, जो कंपनी की सफलता को दर्शाता है।
- 1.55 लाख कृत्रिम गर्भाधान (एआई) किए गए और 4,195 मीट्रिक टन पशु आहार वितरित किये गये।
- 111 मीट्रिक टन खनिज मिश्रण और 107 मीट्रिक टन हरा चारा वितरित किया गया, जिससे पशुधन पोषण में सुधार हुआ है।
- 63,183 डिवार्मर बोलस वितरित किए गए, जो पशु स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

सशक्तिकरण की ओर एक कदम..

कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि सामूहिक प्रयास और महिलाओं के नेतृत्व से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कैसे बदलाव लाया जा सकता है। एक स्थिर आय स्रोत प्रदान कर यह पहल न केवल महिला दुग्ध उत्पादक किसानों की आजीविका में सुधार कर रही है बल्कि उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति को मजबूत कर रही है। आने वाले समय में, कंपनी अपने संचालन का विस्तार करने, दूध उत्पादन बढ़ाने और दीर्घकालिक विकास के लिए नवीन प्रक्रियाओं को अपनाने की योजना बना रहा है। यह उद्यम केवल दूध उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि हजारों महिलाओं और उनके परिवारों के लिए बेहतर भविष्य बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम है।

उपलब्धियाँ

अपनी स्थापना के बाद से ही कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड ने दूध संग्रहण, सदस्यता में वृद्धि और वित्तीय लाभ के क्षेत्र में शानदार प्रगति दर्ज की है।

कौशिकी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड की व्यवसायिक विवरणी:–

विवरण	2018–19	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23	2023–24	2024–25
कुल सदस्य (संचयी)	4,054	16,656	24,888	33,085	41,535	38,308	26,292
औसत दूध संग्रहण (लीटर/दिन)	1,803	11,436	17,534	32,131	58,821	77,087	67,171
किसान को भुगतान (करोड़ रुपये में)	1.05	14.38	21.76	43.41	80.93	110.78	65.46
कुल कारोबार (करोड़ रुपये में)	1.15	16.54	26.32	52.53	100.53	138.34	83.44

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार